# 21 वीं शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों में नई प्रवृत्तियों एवं रंगमंचीय प्रयोग का अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा की पी–एच.डी. (हिन्दी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध विषय की प्रस्तावित रूपरेखा

सन्–2015


**शोध निर्देशिका :–**

डॉ. दयाल प्यारी सिन्हा
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
डी.ई.आई. दयालबाग़ आगरा।

**शोधार्थिनी :–**

नूतन जैन
एम.ए., एम.फिल.(हिन्दी)

**हिन्दी विभागाध्यक्ष**

प्रो. शर्मिला सक्सेना

**कला संकाय प्रमुख**

प्रो. रागिनी रॉय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा–282005

# 21 वीं शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों में नई प्रवृत्तियों एवं रंगमंचीय प्रयोग का अध्ययन

साहित्य की सभी विधाओं में से नाटक सर्वाधिक सक्षम तथा सम्प्रेषण की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण विधा है, विशेष रूप से बाल नाटक। बाल नाटक बालकों के व्यक्तित्व के सन्तुलित विकास के लिए एवं उन्हें नैतिक व सामाजिक शिक्षा देने के लिए एक सशक्त माध्यम है। इसी चेतना के कारण पिछले कुछ दशकों में बाल नाटक एवं रंगमंच ने एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। हिन्दी बाल नाटकों का महत्त्व सबसे अधिक इसलिए भी है कि बाल नाटक एकांतिक विधा न होकर सामाजिक विधा है। बाल नाटक तथा रंगमंच का महत्त्व बालक के अन्तःकरण तथा कामना जगत को जानने की दृष्टि से तो है ही साथ ही इसके माध्यम से बालक अपनी प्रतिभा की सशक्त अभिव्यक्ति कर सकते हैं। बाल नाटक तथा रंगमंच के माध्यम से बालकों का सर्वांगीण विकास ही नहीं होता बल्कि यह बालकों के कोमल एवं ऊर्जा से परिपूर्ण अन्तःकरण को सृजनात्मक और सहज ढंग से उचित दिशा में विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाल नाटक एवं रंगमंच बालकों की प्रतिभा को उभारने में अत्यधिक सहायक है। आज देश के छोटे–छोटे शहरों में भी बालकों की रंगमंच सम्बन्धी कार्यशालाएँ आयोजित की जा रही हैं, जिनके द्वारा बालकों की रचनात्मक प्रतिभा को सामने लाने का प्रयास किया जा रहा है। बाल रंगमंच मौलिक प्रतिभा को ही विकसित नहीं करता बल्कि समाज और संस्कृति को जोड़ने में भी सहायक सिद्ध होता है और बालकों में सामाजिक सहयोग, आत्मविश्वास तथा अनुशासन को जाग्रत करता है।

स्वतन्त्रता से पूर्व हिन्दी बाल नाटकों की सम्पन्न परम्परा दिखाई पड़ती है। उस समय इतने अच्छे, चुस्त और सुघड़ नाटक लिखे गए, जिन्हें पढ़कर आज भी मन में रोमांच उत्पन्न होता है। स्वतन्त्रता से पूर्व पारम्परिक ढंग के ऐतिहासिक–पौराणिक बाल नाटक लिखे गए, जिनमें बाल रंगमंच, कलात्मकता तथा सार्थकता को ढूँढना कठिन था। इस समय परिचित कथानकों को आधार बनाकर ही बाल नाटक लिखे गए। स्वतन्त्रता से पूर्व के बाल नाटककारों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राजा लक्ष्मण सिंह, भगवन्ननारायण भार्गव, जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद', रामचन्द्र रघुनाथ सर्वटे, मास्टर बल्देव प्रसाद, रामनरेश त्रिपाठी, रामेश्वर दयाल दुबे, डॉ॰ रामकुमार, हरिकृष्ण प्रेमी आदि का नाम उल्लेखनीय है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् लिखे गए बाल नाटकों में वस्तुगत एवं शिल्पगत परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इस समय बालकों के लिए सरल, सहज, बोधगम्य नाटक लिखे गए, साथ ही ऐसे नाटकों के महत्त्व को स्वीकार किया गया, जो बालकों को अभिनय के अवसर प्रदान

करें। स्वातन्त्र्योत्तर युग में प्रयोगात्मक नाटकों को बल मिला, जो बालकों की समस्याओं से सम्बन्धित हैं। इस समय ऐतिहासिक–पौराणिक विषय–वस्तु को न आधार बनाकर नवीन कथ्यों का प्रयोग किया गया। स्वतन्त्रता के पश्चात् के बाल नाटककारों में केशवचन्द्र वर्मा, प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त', वेद राही, स्वदेश कुमार, डॉ॰ मस्तराम कपूर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, श्रीकृष्ण, कमलेश्वर, चिरंजीत, हरिकृष्ण देवसरे, मनोहर वर्मा, विष्णु प्रभाकर, रेखा जैन, देववती शर्मा, मंगल सक्सेना, शीला गुजराल, रामधारी सिंह दिनकर, देवराज दिनेश, सरस्वती कुमार, कुदसिया जैदी आदि का नाम उल्लेखनीय है। स्वतन्त्रता के पश्चात् रंगमंच को बालकों की शिक्षा और बाल मनोरंजन के एक स्वतन्त्र साधन के रूप में स्वीकार किया गया। बाल रंगमंच के विकास में देश की कुछ नाट्य संस्थाओं ने भी अपना अप्रतिम योगदान दिया, जिनमें प्रमुख हैं– उमंग(दिल्ली), संस्कार रंग टोली(दिल्ली), अनन्त(दिल्ली), टोली(भोपाल), क्रिएटिव आर्ट सोसाइटी(जोधपुर), सृजन संस्थान(जोधपुर), समानान्तर बाल रंगमंच(गोरखपुर), आगरा लिटिल इप्टा( आगरा), बाल नाट्य मंच(लखनऊ) आदि।

21 वीं शती के प्रथम दशक के हिन्दी बाल नाटकों में नाट्य संवेदना सम्बन्धी नवीन प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं। बालकों की अपनी समस्याओं और बदलते समाज की स्थितियों पर आधारित विषयों को बाल नाटककारों ने कथ्य के रूप में ग्रहण किया। आज के बाल नाटक समकालीन जीवन की विकृतियों और विसंगतियों को उभारने में पूरी तरह सक्षम हैं। आज के बाल नाटकों की कथावस्तु सरल, संक्षिप्त तथा सुगठित है। वर्तमान समय के बाल नाटकों की कथावस्तु, बालकों की अपनी कथावस्तु है। वे सामयिक परिवेश से जुड़े हुए तो हैं ही, साथ ही उनमें बालकों की अनुभूतियों की पकड़ भी विद्यमान है। ये नाटक बालकों में कलात्मक अभिरुचि जाग्रत करने में सहायक सिद्ध होते हैं। 21 वीं शती के प्रथम दशक के बाल नाटक आधुनिक विचार को लेकर चलते हैं, जो किसी न किसी तरह से बालकों को एक आधुनिक जगत का नागरिक बनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। वर्तमान समय में ऐसे नाटक लिखने पर विशेष बल दिया जा रहा है, जो आज के बालक और उनकी समस्याओं से सम्बन्धित हैं। बाल नाटकों के माध्यम से बालकों को नवीन एवं खुशहाल समाज बनाने के सपने और नवीन विचारों से जोड़ने का अच्छा और सृजनात्मक प्रयास हो रहा है साथ ही बच्चों की दबी हुई रचनात्मक ऊर्जा को उभारने का अवसर भी मिल रहा है। 21 वीं शती के प्रथम दशक के बाल नाटकों में एक ओर हास्य के छींटे या मधुर फुहारें हैं तो दूसरी ओर जीवन की विसंगतियों का भी चित्रण है जिनमें बच्चों और बड़ों के सम्बन्धों की विभिन्न विडम्बनाएँ दृष्टिगत होती हैं। आज बाल नाटकों का कथानक पुरातन मूल्यों को खण्डित कर नवीन साँचे में ढल गया है। 21 वीं शती के प्रथम दशक में लिखे गए बाल नाटकों में नवीन चरित्रगत

प्रवृत्तियाँ भी दिखाई देती हैं। चरित्रगत व्यापारों के द्वारा ही नाटक की अनुभूति अभिव्यक्त होती है अर्थात् चरित्र के कारण नाटकों की अनुभूति का प्रत्यक्षीकरण होता है। नाटक में कथावस्तु के उपरान्त चरित्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि नाटकों की सफलता पात्रों पर ही आधारित होती है। स्वतन्त्रता से पूर्व लिखे गए बाल नाटकों में ऐतिहासिक तथा पौराणिक पात्रों की प्रधानता होती थी लेकिन 21 वीं शती के प्रथम दशक के बाल नाटकों के पात्रों का निर्माण समस्याओं, समसामयिक परिस्थितियों और समाज की परिवर्तित स्थितियों से हुआ है। समकालीन जीवन चिन्ताओं तथा समस्याओं से आपूरित है, उसी के अनुरूप बाल नाटकों में चरित्रों की सृष्टि हुई है। वर्तमान समय के बाल नाटकों में पात्रों की संख्या सीमित होती है तथा उनके चरित्र समकालीन जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। आज के बाल नाटकों में उन चरित्रों की भी प्रधानता है, जो सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिकता तथा आदर्श की प्रतिमूर्ति हैं। वर्तमान समय के बाल नाटकों में सहज चरित्रों की सृष्टि हुई है, जो काल्पनिक न होकर यथार्थ पर आधारित हैं। आज के बाल नाटकों में चरित्रों के निर्माण की आवश्यकता नहीं पड़ती वरन् बालक स्वयं ही खेल–खेल में चरित्र–निर्माण कर लेते हैं। वर्तमान बाल नाटकों में हास्य चरित्रों की भी सृष्टि हुई है, जो बालकों को ही नहीं बल्कि युवाओं को भी हिम्मत से जीने और समस्याओं का हँसकर सामना करने का साहस देते हैं।

बाल नाटकों में नाट्य संवेदना सम्बन्धी अन्य प्रवृत्तियाँ भी दृष्टिगत होती हैं, जिनमें एक ओर स्थूल उपदेश और हृदय परिवर्तन की प्रवृत्ति दिखाई देती है तो दूसरी ओर रचनात्मक ढंग से बालकों की भूलों की ओर संकेत करते हुए उनका उचित मार्गदर्शन करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। 21 वीं शती के प्रथम दशक के बाल नाटकों में एक ओर राष्ट्रीय स्वाभिमान का भाव तथा उपदेशात्मकता है तो दूसरी ओर कुछ नवीन कार्य कर दिखाने की ललक विद्यमान है। बाल नाटकों में कविता, कहानी और नाटक तीनों का समन्वय है। आज के हिन्दी बाल नाटकों में हास्यपूर्ण एवं तीखी व्यंग्यात्मक स्थितियाँ भी दृष्टिगत होती हैं। 21 वीं शती के प्रथम दशक के बाल नाटकों के माध्यम से बालकों की कल्पना शक्ति और रचनात्मक प्रतिभा का विकास ही नहीं हुआ है बल्कि वर्तमान समय की शिक्षा पद्धति की विसंगतियों की ओर भी संकेत किया गया है। वर्तमान समय में भारतीय तथा अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनूदित बाल नाटक भी दिखाई देते हैं। मराठी, उर्दू, बंगला आदि भाषाओं के बाल नाटकों का हिन्दी भाषा में अनुवाद दृष्टिगत होता है।

21 वीं शती के प्रथम दशक के हिन्दी बाल नाटकों में अभिव्यंजना की दृष्टि से भी परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। बाल नाटकों में संवादों का अपना विशेष महत्त्व होता है। बाल अभिनेताओं के लिए दीर्घ और दुर्बोध संवाद न केवल बोलने में ही कठिन सिद्ध होते हैं बल्कि उन्हें समझने में भी दर्शकों को कठिनाई होती है। वे ही संवाद अधिक ग्राह्य होते हैं, जो लघु और सहज

होते हैं और जिन्हें बाल अभिनेता भी सुगमता से कंठस्थ कर लेते हैं। वर्तमान समय में कुछ ही नाटककारों ने परिस्थिति के अनुकूल, विचार–संप्रेषण तथा ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी के लिए दीर्घ संवादों की रचना की है, जो कहीं अखरते नहीं हैं। आज के बाल नाटकों में पद्यात्मक संवादों का प्रयोग हुआ है, जिन्हें बालक आसानी से याद कर लेते हैं। पद्यात्मक संवाद संगीतात्मकता, लयात्मकता और तालबद्धता से युक्त होने के कारण बालकों द्वारा सहज स्मरणीय हो जाते हैं। गद्य नाटकों में भी स्वर–संगति और शब्दों की योजना पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे संवादों की भाषा सहज बनी रहती है। आज के बाल नाटकों के संवादों की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि अधिकतर संवाद बालकों द्वारा बोले या सुझाए गए होते हैं। बालकों का भाषा ज्ञान और शब्द कोश सीमित होने के कारण नाटककारों ने बाल नाटकों की रचना सहज और सरस भाषा में की है। विशेष रूप से छोटे बालकों के लिए सहज चित्रांकन वाली भाषा का प्रयोग हुआ है। वर्तमान समय के बाल नाटकों की भाषा बालकों की अपनी भाषा है, जिसमें वे बोलते, सुनते तथा समझते हैं। बाल नाटकों में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग होने के साथ–साथ मुहावरे, लोकोक्तियों तथा काव्यात्मक भाषा का प्रयोग भी हुआ है। आज के बाल नाटकों की शैली में संगीत, नृत्य, ताल, अभिनय आदि का समन्वय है। भले ही यह प्राचीन परम्परा के अनुकूल है किन्तु वर्तमान समय में लयबद्ध पद्धति के द्वारा ही कम उम्र के बालक नाटक सीख जाते हैं।

आज का बाल रंगमंच बच्चों का खुला संसार है, जिसमें बालकों को अपनी इच्छानुसार अभिनय करने, नाचने–गाने और बोलने की पूरी स्वतन्त्रता दी जाती है। वर्तमान समय के बाल रंगमंच में न तो वेशभूषा का बंधन है, न पर्दा गिराने–उठाने का झंझट है और न ही दीर्घ संवाद रटने की समस्या है। बालक स्वयं ही अभिनय करते हुए संवाद बोलते जाते हैं। अभिनय के सहज और मुक्त वातावरण ने बाल रंगमंच को नवीन दिशा प्रदान की है। आज के बाल नाटकों की दृश्य–योजना साधारण तथा बालक के आस–पास की वस्तुओं द्वारा निर्मित है। इस प्रकार की दृश्य–योजना बच्चों को यथार्थ का बोध कराती है। वेशभूषा का भी बाल रंगमंच में विशेष महत्त्व होता है। वह पात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का बोध दर्शकों को कराती है। अधिक तड़क–भड़क वाली या बनावटी वेशभूषा बालकों के अभिनय में बाधक बनती है। आज के बाल नाटकों में रूप–सज्जा एवं मंच–सज्जा भी साधारण व सरल होती है तथा प्रकाश–व्यवस्था का प्रयोग भी सशक्त रूप से किया जा रहा है। ध्वनि के माध्यम से कथावस्तु की सशक्त रूप से अभिव्यक्ति हुई है। वर्तमान समय के बाल नाटकों में गीत–संगीत का भी अत्यधिक महत्त्व है। ये नाटक को नीरस नहीं होने देते हैं, साथ ही दर्शकों को बांधे रखते हैं। बाल नाटकों को सरस बनाने के लिए गीत–संगीत का प्रयोग हुआ है। आज के बाल नाटकों में नुक्कड़ नाटक सम्बन्धी

प्रयोग भी दृष्टिगत होते हैं। ये नाटक अनौपचारिक होते हुए भी दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

21 वीं शती के प्रथम दशक का बाल रंगमंच एक स्वतन्त्र और विशिष्ट स्थान ग्रहण कर चुका है। वह हिन्दी रंगमंच का एक भाग न होकर अपने स्वतन्त्र अस्तित्व एवं अनुभूति के साथ विद्यमान है। बाल रंगमंच का तात्पर्य केवल बाल नाटक कराना ही नहीं है बल्कि वह बालकों के व्यक्तित्व–विकास एवं उनके भविष्य–निर्माण का सर्जनात्मक माध्यम है। इसमें निर्देशक और नाटककार केन्द्र में नहीं हैं वरन् यह केवल बालकों के लिए, बालकों का रंगमंच है, जिसमें उन्हीं की भाषा एवं उन्हीं की क्रीड़ा के स्वर हैं। आज के बालक रटा हुआ नाटक नहीं कर रहे बल्कि वे नाटक का निर्माण करते हुए खेल–खेल में सहज हर्ष के साथ नाटक कर रहे हैं। वर्तमान समय का बाल नाटक और रंगमंच परम्परा से मुक्त होकर बालकों की आवश्यकताओं, रुचियों तथा कल्पनाओं की उड़ान से जुड़ गया है। इस सहज प्रक्रिया में बालक अपनापन अनुभव करने के साथ–साथ अधिक उन्मुक्त, जीवन्त और क्रियात्मक हो गए हैं। बाल नाटक और रंगमंच की रचना प्रक्रिया वयस्कों की नाट्य–निर्मिति पर आधारित न होकर बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। सम्पूर्ण हिन्दी रंगमंच का मूलभूत रंगमंच निश्चित रूप से बाल रंगमंच है। अतः 21 वीं शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों की नई प्रवृत्तियों एवं रंगमंचीय प्रयोगों का अध्ययन उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

इस विषय से सम्बधित कुछ ग्रन्थ प्रकाश में आ चुके हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है–

**<u>शोध–प्रबन्ध</u>**

'हिन्दी बाल नाटक एवं रंगमंच : एक अध्ययन' (स्वातन्त्र्योत्तर काल के विशेष सन्दर्भ में)–श्रीमती नेहा राकेश बोरसे –सन् 2009–पुणे विश्वविद्यालय

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में हिन्दी बाल नाटक एवं रंगमंच का स्वातन्त्र्योत्तर काल के विशेष सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है लेकिन इसमें 21 वीं शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों की नवीन प्रवृत्तियों तथा नवीन रंगमंचीय प्रयोगों की दृष्टि से अध्ययन उपलब्ध नहीं होता है।

**<u>पुस्तकें</u>**

1. बालरंग (बच्चों का रंगमंच:सिद्धान्त और व्यवहार)–रेखाजैन–राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण–2006
2. बाल साहित्य : रचना और समीक्षा–डॉ. हरिकृष्ण देवसरे–शकुन प्रकाशन, दिल्ली–संस्करण–1979

3. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच–गिरीश रस्तोगी–भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन–प्रथम संस्करण–2004
4. रंगानुभव के बहुरंग–प्रो॰ रमेश गौतम–स्वराज प्रकाशन, दिल्ली–प्रथम संस्करण–2006
5. हिन्दी नाटक : नई परख–रमेश गौतम– स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण–2010
6. हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा–डॉ. श्रीप्रसाद–लोकभारती प्रकाशन–संस्करण–1982
7. हिन्दी बाल साहित्य नई चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ–प्रकाश मनु–कृतिका बुक्स, दिल्ली–प्रथम संस्करण–2014

इन ग्रन्थों में बाल नाटकों का परिचयात्मक तथा नाटक एवं रंगमंचीय तत्त्वों की दृष्टि से तो अध्ययन उपलब्ध होता है लेकिन 21 वीं के शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों की नवीन प्रवृत्तियों एवं रंगमंचीय प्रयोगों की दृष्टि से अध्ययन कहीं भी उपलब्ध नहीं होता है। इसलिए शोधकर्त्री इस दिशा में शोध कार्य करने के लिए प्रेरित हुई। अतः प्रस्तावित शोध का विषय '21 वीं के शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों में नई प्रवृत्तियों एवं रंगमंचीय प्रयोग का अध्ययन' सर्वथा मौलिक एवं नवीन है।

अनुसंधित्सु,

नूतन जैन
एम॰ए॰,एम॰फिल॰,(हिन्दी)

# 21 वीं शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों में नई प्रवृत्तियों एवं रंगमंचीय प्रयोग का अध्ययन

**प्रथम अध्याय – विषय–चयन**

(क) विषय का स्वरूप
(ख) विषय का महत्त्व
(ग) विषय से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्य
(घ) विषय की मौलिकता
(ड़) प्रस्तुत शोध का उद्देश्य

**द्वितीय अध्याय – हिन्दी बाल नाटक एवं रंगमंच : पृष्ठभूमि एवं स्वरूप**

(क) हिन्दी बाल नाटक एवं रंगमंच : स्वरूप एवं विकास–यात्रा
(ख) हिन्दी के प्रमुख बाल नाटककार एवं उनके नाटक
(ग) हिन्दी बाल रंगमंच से संबंधित प्रमुख नाट्य संस्थाएँ

**तृतीय अध्याय – 21 वीं शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों में नाट्य संवेदना सम्बन्धी नई प्रवृत्तियाँ**

**(क) वस्तुगत प्रवृत्तियाँ–**

- बाल मनोविज्ञान पर आधारित कथानक
- बालकों की समस्याओं, आवश्यकताओं और रुचियों से सम्बन्धित कथानक
- बालमन की कोमल कल्पना का भरपूर पोषण
- मनोरंजन के साथ–साथ जीवन की सम्यक् अभिव्यक्ति
- रोचक तथा सोद्देश्य कथानक

**(ख) चरित्रगत प्रवृत्तियाँ–**

- समसामयिक परिस्थितियों और समस्याओं से जुड़े हुए चरित्र
- समकालीन जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले चरित्र
- सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिकता और आदर्श से अनुप्राणित चरित्र
- बालकों द्वारा स्वयं चरित्र निर्माण
- काल्पनिक चरित्रों की अपेक्षा यथार्थ पर आधारित चरित्रों की सृष्टि

**(ग) अन्य प्रवृत्तियाँ–**

- रचनात्मक रूप से बालकों का उचित मार्गदर्शन
- कविता, कहानी और नाटक तीनों का समन्वय
- हास्य एवं व्यंग्य का समावेश
- मराठी, उर्दू, बंगला आदि भाषाओं के बाल नाटकों का हिन्दी में अनुवाद

निष्कर्ष

**चतुर्थ अध्याय – 21 वीं शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों में नाट्य अभिव्यंजना सम्बन्धी नई प्रवृत्तियाँ**

**(क) संवादगत प्रवृत्तियाँ–**
- स्वयं बालकों द्वारा बोले या सुझाए गए संवाद
- परिस्थिति के अनुकूल संवाद
- पद्यात्मक संवाद

**(ख) भाषागत प्रवृत्तियाँ–**
- बालकों की स्वयं की भाषा
- बाल मनोविज्ञान की सशक्त अभिव्यक्ति करने वाली भाषा
- काव्यात्मक भाषा
- लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग

**(ग) शैलीगत प्रवृत्तियाँ–**
- संगीत, नृत्य, अभिनय आदि से समन्वित शैली
- बाल मनोविज्ञान की सशक्त अभिव्यक्ति करने वाली शैली
- हास्य–व्यंग्यपूर्ण शैली

निष्कर्ष

**पंचम अध्याय – 21 वीं शती के प्रथम दशक के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों में नए रंगमंचीय प्रयोग**

(क) दृश्य योजना
(ख) वेशभूषा एवं रूप सज्जा
(ग) मंच सज्जा
(घ) प्रकाश–व्यवस्था
(च) अभिनय
(छ) ध्वनि–व्यवस्था और गीत–संगीत
(ज) नुक्कड़ नाटक

निष्कर्ष

**षष्ठ अध्याय – बालकों के व्यक्तित्व के विकास में बाल नाटक एवं रंगमंच की भूमिका**

**उपसंहार**

**परिशिष्ट** – (क) प्रमुख बाल नाटककारों एवं रंगकर्मियों से साक्षात्कार
(ख) संदर्भ सूची–
- आधार ग्रंथ
- सहायक ग्रंथ
- शब्दकोश
- पत्र–पत्रिकाएँ

(ग) बाल रंगमंच से सम्बन्धित प्रमुख नाट्य–संस्थाएँ एवं प्रमुख निर्देशक

# परिशिष्ट

## आधार–ग्रन्थ

| क्र. सं. | ग्रन्थ का नाम | लेखक | प्रकाशन | संस्करण |
|---|---|---|---|---|
| 1. | अनमोल खजाना, 'उमंग' | उदय प्रकाश, संपा. अशोक वाजपेयी | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 2. | आविष्कार जूते का | श्रीलाल शुक्ल | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 3. | ईमानदार लड़का | विष्णु प्रभाकर | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2002 |
| 4. | ऐसे–ऐसे | विष्णु प्रभाकर | किताब घर प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2002 |
| 5. | कमलेश्वर के बाल नाटक | कमलेश्वर | प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |
| 6. | कौन बड़ा कौन छोटा | रेखा जैन | नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |
| 7. | चप्पल कांड, 'उमंग' | राजेश जैन, संपा. अशोक वाजपेयी | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 8. | चोर हाट | विष्णु प्रभाकर | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2002 |
| 9. | जंगे आजादी, 'उमंग | कमलेश्वर, संपा. अशोक वाजपेयी | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 10. | जादू की गाय | विष्णु प्रभाकर | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2002 |
| 11. | झगड़ालू लड़का | श्रीकृष्ण | अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |
| 12. | टमरक टूँ | रामनिरंजन शर्मा ठिमाउ | हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2003 |
| 13. | टिम्बकटू, 'उमंग' | रमेशचंद्र शाह संपा. अशोक वाजपेयी | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 14. | तोताराम | श्रीकृष्ण | अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |
| 15. | नटखट कृष्ण | रेखा जैन | वाणी प्रकाशन नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |
| 16. | नन्हे संकल्प | श्रीकृष्ण | अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |
| 17. | पाँच बाल नाटक | सत्येन्द्र शरत | शुभम् प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2005 |
| 18. | बंदर और मुसाफिर | रेखा जैन | मैत्रेय पब्लिकेशन नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 19. | बल्लु हाथी का बालघर, 'उमंग' | अशोक वाजपेयी, संपा.अशोक वाजपेयी | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 20. | बहादुर बेटा | विष्णु प्रभाकर | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2002 |
| 21. | ब्रह्म राक्षस का नाई, 'उमंग' | राजेश जोशी, संपा. अशोक वाजपेयी | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 22. | माँ का बेटा | विष्णु प्रभाकर | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2002 |
| 23. | मांग पत्र | श्रीकृष्ण | अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |
| 24. | मीठा जहर | रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाउ' | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2002 |
| 25. | मोटे लाला | विष्णु प्रभाकर | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2002 |
| 26. | मोहन का दुख, 'उमंग' | गिरिराज किशोर, संपा.अशोक वाजपेयी | राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 27. | रामू की होली | विष्णु प्रभाकर | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 28. | शिशु सम्मेलन | श्रीकृष्ण | अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |
| 29. | शोर | मस्तराम कपूर उर्मिल | विराट भवन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2004 |
| 30. | सच्चा पारखी | रेखा जैन | अरुणोदय प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |
| 31. | सच्चा मित्र | रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाउ' | हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2003 |
| 32. | हिरण्यकश्यप मर्डर केस | श्रीकृष्ण | अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 2000 |

## सहायक–ग्रन्थ

| क्र.सं. | ग्रन्थ का नाम | लेखक | प्रकाशन | संस्करण |
|---|---|---|---|---|
| 1. | आधुनिक हिन्दी नाटक (कथ्य शैली और शिल्प) | डॉ॰ बनवीर प्रसाद शर्मा | अनंग प्रकाशन, दिल्ली | संस्करण 2001 |
| 2. | आधुनिक हिन्दी नाटकः एक यात्रा दशक | नरनारायण राय | भारती भाषा प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण 1979 |
| 3. | आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच | नेमिचन्द्र जैन | मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लि. | प्रथम संस्करण 1978 |
| 4. | नटरंग विवेक | नरनारायण राय | सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली | प्रथम संस्करण 1981 |
| 5. | नाट्य चिंतन और रंगदर्शनः अंतर्संबंध | गिरीश रस्तोगी | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली | प्रथम संस्करण 2013 |
| 6. | नाट्य विमर्श | नरनारायण राय | सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली | प्रथम संस्करण 1984 |
| 7. | बीसवीं शताब्दी का हिन्दी रंगमंच | शशी प्रभा अत्रि | चिन्ता प्रकाशन, (पिलानी राजस्थान) | प्रथम संस्करण 1979 |

## पत्र–पत्रिकाएँ

| क्र.सं. | पत्रिका का नाम | संपादक | प्रकाशन | संस्करण |
|---|---|---|---|---|
| 1. | नटरंग | अशोक वाजपेयी, रश्मि वाजपेयी | दिल्ली | जनवरी–जून 2013 |
| 2. | रंग–प्रसंग | प्रयाग शुक्ल | दिल्ली | 2015 |